आर.एन.आई. नं. DELHIN/2017/73538

सेवा पाती

नन्हें हितेश को मिली नवजीवन की सौगात

सेवा परमो धर्म का सफल प्रयास

● मूल्य » ₹ 5/- ● वर्ष-02 ● अंक 14 ● मुद्रण तारीख » 1 जून -2018 ● कुल पृष्ठ » 12

जल्द आ रहा है

ज़िन्दगी होगी बेहतर जब आप करेंगे कन्यादान

निर्धन, असहाय व दिव्यांगों हेतु

विशाल नि:शुल्क सर्वधर्म दिव्यांग तथा निर्धन सामूहिक विवाह

आयोजक : नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट

दिनांक : 8 व 9 सितम्बर, 2018 | स्थान : सेवामहातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर

नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह हेतु करें-सहयोग

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)	51,000/-	भोजन प्रसाद (100 सहयोगी अपेक्षित)	5,100/-
आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)	21,000/-	वेदी सहयोग (प्रति वेदी)	2,100/-
वर-वधू श्रृंगार पुण्य (प्रति जोड़ा)	11,000/-	मेहन्दी रस्म (प्रति जोड़ा)	2,100/-

/nssudaipur /narayansevasansthan /@narayanseva_ narayansevasansthan

Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-
09649499999,0294-6622222

सेवा पाती

1 जून, 2018

वर्ष 02 अंक 14 मूल्य ₹ 05

कुल पृष्ठ » 12

संपादक मंडल

मार्ग दर्शक » कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक » प्रशान्त अग्रवाल
डिजाईनर » विरेन्द्र सिंह राठौड

संपर्क (कार्यालय)

नारायण सेवा संस्थान

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका)
मुद्रण तारीख 1 जून, 2018
स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान,
प्रकाशक जतन सिंह द्वारा 6473,
कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली-110006
से प्रकाशित तथा
एम.पी. प्रिंटर्स नोएडा से मुद्रित।

Web » www.narayanseva.org
E-mail » info@narayanseva.org

CONTENTS

इस माह... पाठकों हेतु

नवजीवन आपके असीम सहयोग से मिला सहारा

05

- हितेश ने ली चैन की साँस
- मिली तकलीफों से निजात
- दिव्यांग को नवजीवन
- मुश्किल में मिला सहारा

प्रार्थना पीड़ित को दें सहारा, बनें पुण्य के भागी

07

- कुलदीप को दें राहत
- पार्थ को दिलाएं नई जिन्दगी

पीड़ित सेवा का आधार,
यही है जीवन का सार।।

अनुरोध दूर करें....पीड़ितों के दुःख

08

- कैलाश, उदयपुर
- विकास कुमार, हरिद्वार
- संजीव कुमार,यमुनानगर
- सरला बिसान, जलगांव

सहायता दिव्यागों के संग बनाएं यादगार पल

09

- दान सहयोग अपील
- आत्मनिर्भर बनाने में-सहयोग
- संस्थान के एकाउन्ट नम्बर
- संस्थान के विभिन्न चैनल

अपनों से अपनी बात

पू. कैलाश 'मानव'

कण-कण में भगवान

हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि कण-कण में परमपिता परमेश्वर का वास है। इस सृष्टि की सभी रचनाएं, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी ईश्वर की ही देन है। हमें सदैव परमात्मा की प्रार्थना में लीन रहना चाहिए।

एक संत अपने शिष्यों को शिक्षा के दौरान एक बात हर रोज दोहराते, 'कण-कण में भगवान है।' वे उन्हें समझाते कि ऐसी कोई वस्तु और स्थान नहीं है जहाँ भगवान नहीं हो। प्रत्येक वस्तु को हमें भगवान मान कर नमन् करना चाहिए। एक दिन उनका शिष्य सदाशिव भिक्षा के लिए निकला। रास्ते में सामने से एक हाथी दौड़ता आता दिखाई दिया। महावत लगातार लोगों को सावधान करता आ रहा था। तभी सदाशिव को गुरू की बात याद आ गई। वह रास्ते में ही निडरता और भक्ति भाव से खड़ा रहा। वह मन ही मन कह रहा था, 'मुझमें भी भगवान है और इस हाथी में भी भगवान है। फिर भला भगवान को भगवान से कैसा डर? 'महावत ने जब सदाशिव को रास्ते में खड़े देखा तो वह जोर से चिल्लाया, 'सुनाई नहीं देता? हट जाओ! क्यों मरने पर तुले हो', लेकिन सदाशिव पर महावत की बात का कोई असर नहीं हुआ। वह अपनी जगह डटा रहा। तब तक पागल हाथी बिल्कुल नजदीक आ चुका था। उसने सदाशिव को सूंड में लपेटा और घूमा कर फेंक दिया। सदाशिव नाली में जाकर गिरा। उसे बहुत चोट आई। उसके साथी उसे उठाकर आश्रम में ले गए। उसने कहा, 'गुरूजी, आप तो कहते हैं कि कण-कण में भगवान है। हाथी ने मेरी कैसी हालत कर दी? 'गुरू बोले, हाथी में भी भगवान का वास है, परन्तु तुम यह कैसे भूल गए कि उस महावत में भी भगवान है जो तुम्हें दूर हटने के लिए कह रहा था। तुम्हें उसकी बात भी तो सुननी चाहिए थी। सदाशिव बोला, आपने सही कहा गुरूदेव, मैंने आपकी बात को सिर्फ सुना ही था, परन्तु उसे समझा नहीं। अतः मुझे क्षमा करे। ■

प्रेरक प्रसंग

'सेवक' प्रशान्त भैया

धैर्य का पुरस्कार

हमें सदैव धैर्यशील बनें रहना चाहिए, क्योंकि धैर्यशीलता ही मानव की सबसे बड़ी पूंजी है। सफलता भी धैर्यशील व्यक्ति के ही कदम चूमती है। मुश्किल की घडियों में भी धैर्य ही काम आता है। हमें धैर्य कभी नहीं खोना चाहिए।

एक बार गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। उसी गांव में एक दयालु सेठ भी था। उसके कोई संतान नहीं थी। उसने घोषणा करवाई कि वह बच्चों को प्रतिदिन रोटियाँ बाँटेगा। दूसरे दिन से ही उसके घर के आगे बच्चों की भीड़ लग गई। वे रोटी की टोकरी तक पहुँचने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे। रोटियां चूंकि बहुत तादाद में बनी थीं इसलिए टोकरी में रखी रोटियाँ छोटी-बड़ी थी। हर बच्चा चाहता था कि उसे बड़ी रोटी मिले। उन्हीं बच्चों में एक छोटी लड़की भी थी जो भीड़ से दूर खड़ी थी। जब सभी बच्चों ने रोटियाँ ले ली तो वह लड़की आगे बढ़ी। उस समय केवल एक रोटी बची थी। लड़की ने वह रोटी ली और वहां से चली गई। दूसरे दिन भी यही क्रम जारी रहा। इस बार टोकरी में एक छोटी रोटी बची थी। लड़की ने बड़े संतोष से वह रोटी ली और अपने घर आ गई। जब उसने रोटी तोड़ी तो उसमें उसे एक सोने का सिक्का मिला। मां ने उसे वह सिक्का वापस करके आने को कहा। लड़की ने जब सिक्का सेठ को वापस किया तो सेठ बोला, 'मैंने यह सिक्का जानबूझकर रोटी में रखवाया था। यह मुझे उस बच्चे को पुरस्कार में देना था जो सबसे ज्यादा धैर्यवान हो। तुम इसकी हकदार हो इसलिए इस सिक्के को रख लो।' लड़की बोली, 'सेठजी, मेरा पुरस्कार मुझे मिल चुका है, क्योंकि मुझे रोटी पाने के लिए धक्कामुक्की नहीं करनी पड़ी। इसलिए, यह सिक्का आप ही रखिए।' लड़की ने वह सिक्का सेठ को लौटा दिया। सेठ ने लड़की के पिता से कहा, मेरे कोई संतान नहीं है इसलिए आपकी पुत्री को मैं गोद लेना चाहता हूँ। उसके बाद, उस लड़की को सेठ ने गोद ले लिया और उसके परिवार की जिम्मेदारी उस दयालु सेठ ने ही निभाई। ■

नवजीवन

नन्हें हितेश को मिली नवजीवन की सौगात

» दिल में छेद का हुआ निःशुल्क ऑपरेशन

➲ राजस्थान स्थित उदयपुर जिले के रहने वाले कैलाश का 2 वर्षीय पुत्र हितेश जन्म से ही दिल में छेद की बीमारी से ग्रसित था। हितेश के पिता मजदूरी का काम करके महज दो हजार चार सौ रूपये महीना कमाते हैं। इससे वे बड़ी मुश्किल से अपना परिवार का पालन- पोषण कर पाते हैं। हितेश न तो पढ़ पाता और न दूसरे बच्चो की तरह खेल पाता था। कैलाश अपने बच्चे को कई जगह लेकर गए, मगर उसकी हालत जस की तस बनी रही। उसकी हालत दिन- ब- दिन बिगड़ती ही जा रही थी। काफी मशक्कत के बाद उन्होंने जयपुर के नारायण हृदयालय हॉस्पिटल में अपने बच्चे का चैकअप करवाया, जहाँ डॉक्टर ने ऑपरेशन की राय दी। उसका खर्च 1,76,840 रूपये बताया गया। दूसरे लोगों के यहाँ मजदूरी करके महीने के दो हजार चार सौ रूपये कमाने वाले कैलाश के लिए इतनी बड़ी राशि जुटा पाना जैसे खुद को बेचने के बराबर था। ऐसी विकट परिस्थिति में उन्हें उम्मीद की एक किरण दिखायी दी सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के रूप। वे अपने बेटे को लेकर उदयपुर आये और ट्रस्ट से अपने बच्चे की मदद के लिए गुहार लगाई। ट्रस्ट ने बच्चे और परिवार की हालत को देखते हुए समस्त करुणा हृदयी दानदाताओ की मदद से जयपुर के नारायण हृदयालय हॉस्पीटल में हितेश का सफल ऑपरेशन करवाया। आज हितेश को पढ़ने और खेलने में कोई दिक्कत पेश नहीं आती है।

मिली तकलीफों से निज़ात...प्रतिभा को

» आगे आया मदद को ट्रस्ट

➲ उत्तरप्रदेश राज्य के सीतापुर शहर के एक छोटे से गाँव रऊना के रहने वाले रामसागर मजदूरी करके अपने परिवार का खर्चा वहन करते हैं। रामसागर की बेटी प्रतिभा (6) को जन्म से नीचे के होठ में दिक्कत थी। होठ फूला हुआ था, उम्र के साथ-साथ होंठ और भी फूलता चला जिससे बच्ची को कई तकलीफों का सामना करना पड़ता था। उसे बोलने और खाने में बहुत दिक्कत आती थी। बच्ची के पिता ने उसको कई जगह दिखाया, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। कुछ दिनों पश्चात प्रतिभा के दादा कृष्णकुमार ने अपनी पोती को लखनऊ के किसी निजी अस्पताल में दिखाया जहाँ डॉक्टर ने सर्जरी के लिए सलाह दी। उन्होंने बताया कि सर्जरी में करीब 50 हजार रूपये का खर्चा आएगा। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण वह अपनी बच्ची की सर्जरी करवाने में असमर्थ थे। तभी उन्हें किसी दिव्यांग पेशेंट द्वारा सेवा परमो धर्म ट्रस्ट की जानकारी मिली तो वे तुरंत अपनी बेटी को लेकर उदयपुर आये और यहाँ आकर उन्होंने ट्रस्ट संस्थापक प्रशांत अग्रवाल से मुलाकात की और उन्हें अपनी पीड़ा बताई। स्थिति की नजाकत को समझते हुए श्री अग्रवाल ने ट्रस्ट के माध्यम से प्रतिभा के ऑपरेशन के लिए आवश्यक 50 हजार रुपए की राशि उपलब्ध करवाई जिसके फलसवरूप प्रतिभा का ऑपरेशन लखनऊ के अस्पताल में सफलतापूर्वक सम्पन हुआ। प्रतिभा अब स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही है। रामसागर ने ट्रस्ट एवं श्री अग्रवाल के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है।

मिली नई जिन्दगी दिव्यांश को

» अब पूर्ण स्वस्थ

➲ खेलने-कूदने के दिनों में यदि बालक को किसी गम्भीर बीमारी ने जकड़ लिया हो तो उस बालक तथा उसके परिजनों की तकलीफों को शब्दों में बयां करना मुश्किल ही नहीं, अपितु नामुमकिन बन पड़ता है। ऐसा ही कुछ हुआ उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले के रहने वाले नन्हे बालक दिव्यांश के साथ, प्रकृति की विडम्बना देखिये कि यह नन्हा बालक जन्म से ही मलद्वार से वंचित था। जिसके कारण उसे शारीरिक रूप से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। दुःखद विषय यह है कि दिव्यांश के पिता कुछ समय पहले ही इस संसार को अलविदा कह गए, परिणामस्वरूप परिवार की सारी जिम्मेदारी दिव्यांश की माँ के कमजोर कंधों पर आ पड़ी। वे घर-घर जाकर काम करके अपना और अपने बेटे का गुजर बसर कर पाती हैं। किसी प्रकार उन्होंने अपने रिश्तेदारों एवं गाँव वालों से आर्थिक मदद प्राप्त कर दिव्यांश की अस्पताल में जाँच करवाई जहाँ डॉक्टर ने ऑपरेशन ही एक मात्र विकल्प बताया तथा उस पर 50 हजार रूपए की राशि का खर्च होने का अनुमान लगाया, एक गरीब माँ के लिए खुद के बलबूते पर इतनी राशि की व्यव्स्था करना मुश्किल ही नहीं, अपितु नामुमकिन था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस विकट परिस्थिति से कैसे छुटकारा मिले, तभी उन्हें एक टी वी चैनल के माध्यम से सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के विभिन निःशुल्क सेवा प्रकल्पो की जानकारी प्राप्त हुई तो उन्होंने उदयपुर स्थित ट्रस्ट में आकर मदद की गुहार लगाई। उन्हें ट्रस्ट के माध्यम से 50 हजार रूपए की आर्थिक मदद दी गई जिससे दिव्यांश का ऑपरेशन सम्पन हुआ। ■

मुश्किल में मिला सहारा

➲ जयपुर निवासी अलीशा चावला के ऑटो ड्राईवर पिता हर दिन घर से निकलते जरूर है, लेकिन वापस घर कब लौटेंगे?

पता नही.....दिन भर अपनी जान हथेली पर लेकर जी-तोड़ मेहनत..... सिर्फ घर का खर्च चलाने हेतु.....और इस अवस्था मे यदि पता चले कि उसकी प्यारी सी लाडली अलीशा (15 वर्ष) के दिल की गंभीर बीमारी है तो मानो आसमां से बादल फट गया हो.....पिता के पास इतना पैसा कहाँ कि.... लाडली को नया जीवन दे पाये.....धीरे-धीरे पिता का धीरज बैठने लगा..... कि इसी बीच सेवा की मूरत 'सेवा परमो धर्म' का पता मिला.....उम्मीदों का पहाड़ लिये इस दर पर पहुँचे जहाँ कुछ नहीं, बहुत कुछ मिलने की आशा थी....और हुआ भी यही। अलीशा की जिदंगी का चिराग जल उठा.... जयपुर के नारायण हृदयालय में सफल निःशुल्क ऑपरेशन के पश्चात.....जिदंगी के चिराग जलाये दानी भामाशाहों ने अपने सहयोग से.....■

पीड़ा से मिली मुक्ति

➲ उदयपुर निवासी मयंक (10 माह) के पिता शायद पहले ऐसे किसान होंगे जो यह चाहते थे कि आसमान में बादल

ना छाये और ना ही बारिश हों क्योंकि यह मौसम उनके लाल की जिंदगी लील सकता था.....मयंक के दिल में छेद था...और ऐसा मौसम उसके श्वास लेने में दिक्कत पैदा करता था...अपनी मजबूरी और बेबसता का मारा यह पिता किसी मार्गदर्शक से मिली राय पर सेवा परमो धर्म की राह पर चल निकले और राह ने उनके लाल की जिंदगी दिला दी .....ट्रस्ट के माध्यम से सफल ऑपरेशन हुआ जयपुर के नारायण हृदयालय में। आज आसमां में छाते बादल पिता-पुत्र दोनों को मुस्कान देते है, तकलीफ नहीं। परमात्मा के आशीर्वाद एवं समस्त दानदाताओं के असीम सहयोग से मयंक अब स्वस्थ है तथा सामान्य बालकों की तरह ही जीवनयापन कर रहा है। उसके परिजन ट्रस्ट एवं दानदाताओं को धन्यवाद देते नहीं थक रहे है। ■

अपील

पीड़ितों को दें सहारा, बनें पुण्य के भागी

पीड़ित मानवता की सेवा में संलग्न सेवा परमो धर्म ट्रस्ट गम्भीर बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों का ईलाज करवाकर उन्हें नवजीवन प्रदान कर रहा है। आप सभी से सविनम्र प्रार्थना है कि दान के रूप में अपना असीम सहयोग ट्रस्ट को प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। इस पुण्यकारी कार्य से न सिर्फ आप, अपितु आपश्री के प्रत्येक परिजन को गरीब भाई-बहिनों का आशीर्वाद जीवनपर्यन्त प्राप्त होता रहेगा।

कुलदीप को दिलाएं गम्भीर बीमारी से छुटकारा

» मदद की गुहार

➲ राजस्थान के चुरू जिले के निवासी मनोज कुमार का पुत्र कुलदीप की उम्र महज 3 वर्ष है। उसको बचपन से ही दिल में छेद की तकलीफ थी इस वजह से उसके घर वाले काफी परेशान रहते थे, क्योंकि बच्चे की अचानक तबियत खराब हो जाती थी, इस कारण से बच्चे के शरीर में काफी कमजोरी आ गई थी। मनोज को कुलदीप की बीमारी का कुछ समय पहले ही पता चला। एक दिन कुलदीप की अचानक तबियत खराब हो गई तो मनोज ने गाँव के एक नजदीकी अस्पताल में उसका चैकअप करवाया तो डॉक्टर ने दिल में छेद की परेशानी बताई और जल्द ऑपरेशन करवाने की राय दी। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण मनोज अपने पुत्र का ऑपरेशन करवाने में असमर्थ थे, क्योंकि मजदूरी का कार्य करने वाले मनोज अपने बच्चे का ऑपरेशन कैसे करवा पाते? तभी टीवी के माध्यम से उन्हें सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के बारे में पता चला और उन्होंने बिना समय खोए संस्थान में सम्पर्क किया। **ऐसे में आप सभी दानदाताओं से निवेदन है कि आप कुलदीप की जिन्दगी बचाने में सहायता प्रदान करें।**

पार्थ को दें नई जिन्दगी का तोहफा

» मदद की आस में...

➲ झारखंड के रामगढ़ जिले के निवासी ज्ञान प्रकाश के पुत्र पार्थ की उम्र 3 वर्ष है, पार्थ को बचपन से ही यूरिनल की परेशानी थी जिसमें उसका मलद्वार नहीं था। पार्थ का जन्म हुआ तो ज्ञान प्रकाश के घर में खुशी का माहौल था, लेकिन खुशी कुछ समय की ही थी। ज्ञान प्रकाश को बीमारी के बारे में पता चला तो पार्थ का कई अस्पतालों में चैकअप करवाया गया। जहाँ डॉक्टर ने ऑपरेशन ही आखरी रास्ता बताया, लेकिन आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे अपने बच्चे का ऑपरेशन खर्चा वहन करने में असमर्थ थे। मजदूरी कर अपने घर का गुजारा करने वाले ज्ञान प्रकाश बच्चे का ऑपरेशन कैसे करवा पाते? उन्हें कोई उम्मीद की किरण नजर नहीं आ रही थी। ऐसे में गाँववालों के माध्यम से उन्हें सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के निःशुल्क प्रकल्पों के बारे में पता चला। इस पर उन्होंने बिना समय गवायें ट्रस्ट सें संपर्क किया और मदद की अपील की। **ऐसे में आप सभी दानदाताओं से निवेदन है कि आप पार्थ के ऑपरेशन में मदद करें ताकि वो अपनी जिंदगी सामान्य बच्चों की तरह जी सके।**

दूर करें....पीड़ितों के दुःख

गंभीर बीमारियों से ग्रसित बाल एवं युवा मरीज अपनी बीमारी का ईलाज कराने हेतु संस्थान में आते हैं। ऐसे 4 मरीज संस्थान में पहुँचे हैं। उनकी वर्तमान स्थिति गंभीर है। उन्हें आपकी मदद की सख्त आवश्यकता हैं। आपश्री से प्रार्थना है कि आप स्वेच्छा से दान के माध्यम से संस्थान को सहयोग प्रदान कर इन मरीजों की जान बचाने में अपना बहुमुल्य योगदान दें। धन्यवाद्...

Save these children and youth - - their parents are deeply distressed.

कैलाश
26 वर्ष
उदयपुर (राज.)
किडनियाँ खराब

विकास कुमार
36 वर्ष
हरिद्वार
किडनी सम्बन्धी समस्या

संजीव कुमार
38 वर्ष
यमुनानगर
हाथी पाँव

सरला बिसान
20 वर्ष
जलगांव
प्लास्टिक सर्जरी

विविध सेवा प्रकल्प हेतु दान- सहयोग की अपील

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त विकलांगों के ऑपरेशन हेतु सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

दवाई सहयोग प्रतिदिन

1 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	1,100/-	51 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	56,100/-
11 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	12,100/-	101 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	1,11,100/-
21 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	23,100/-	501 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	5,51,100/-

आपका यह सहयोग संस्थान के कॉरपस फण्ड में जायेगा जिसका उपयोग निःशक्त जनों की सेवा में होगा

आजीवन संरक्षक राशि	51,000/-	आजीवन सदस्य राशि	21,000/-

सहमति-पत्र के साथ कृपया अपनी करूणा-सेवा भेजें

आदरणीय अध्यक्ष महोदय,

मैं (नाम) ▶.....सहयोग मद ▶ .....

उपलक्ष्य में/स्मृति मे ▶.....

संस्थान द्वारा संचालित सेवा कार्यों में रूपये ▶.....का चेक नं./डी.डी. नं./एम.ओ./पे-इन स्लीप

..... दिनांक ▶.....से सहयोग भेजने की सहमति प्रदान करता हूँ/करती हूँ।

पूर्ण पता ▶.....

.....

.....

.....

जिला .....पिन कोड .....राज्य .....

मो. नं. .....वाट्सअप नं. ..... ई-मेल .....

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम पर दान-सहयोग प्रदान करें।

जून-2018

हस्ताक्षर

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजन की सेवा में सेवारत्

दिव्यांगों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से प्रार्थना है कि अपना सहयोग प्रदान करावें।

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

50 रोगियों की आजीवन भोजन/नाश्ता मित्ती

वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	30,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	15,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता मित्ती सहयोग राशि	7,000/-

आजीवन लालन-पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे के आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी संस्थान के सानिध्य में रह सकेगा)

दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण हेतु सहयोग राशि

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकल	4,500	13,500	22,500	49,500
व्हील चेयर	3,500	10,500	17,500	38,500
केलिपर्स	1,800	5,400	9,000	19,800
वैशाखी	550	1,650	2,750	6,050

निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह हेतु करें-सहयोग

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)	51,000/-
आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)	21,000/-
वर-वधू श्रृंगार पुण्य (प्रति जोड़ा)	11,000/-
भोजन प्रसाद (100 सहयोगी अपेक्षित)	5,100/-
वेदी सहयोग (प्रति वेदी)	2,100/-
मेहन्दी रस्म (प्रति जोड़ा)	2,100/-

कृत्रिम अंग सहयोग राशि

उपकरण	रूपये
कृत्रिम अंग	10,000/-

प्रति निःशक्त शिविर

सहयोग राशि	1,51,000/-
सम्पर्क करें	09929534444

अपने बैंक खाते से संस्थान बैंक खाते में जमा करें- अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	BranchAddress	RTGS/NEFTCode	Account
Allahabad Bank	3,BapuBazar	ALLA0210281	50025064419
AXIS Bank	Uit Circle	UTIB0000097	097010100177030
Bank of India	H.M.Sector-5	BKID0006615	661510100003422
Bank of Baroda	H.M, Udaipur	BARBOHIRANM	30250100000721
BANK OF MAHARASHTRA	Toran Bawdi, City Station Road, Udaipur	MAHB0000831	60195864584
Canara Bank	Madhuban	CNRB0000169	0169101057571
CENTRAL BANK OF INDIA	UDAIPUR	CBIN0283505	00000001779800301
HDFC	358-Post Office Road, Chetak Circle	HDFC0000119	50100075975997
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
IDBI Bank	16SaheliMarg	IBKL0000050	050104000157292
Kotak Mahindra Bank	8-C, Madhuban	KKBK0000272	0311301094
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	UdaipurMain	UBIN0531014	310102050000148
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
VIJAYA BANK	Gupteshwar Road Titardi	VIJB0007034	703401011000095
YesBank	Goverdhan Plaza	YESB0000049	004994600000102

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार कर में छूट के योग्य है।

नारायण सेवा संस्थान

'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

विभिन्न चैनलों पर संस्थान के सेवा कार्य

भारत में संचालित

- **आस्था** 9.00 am- 9.20 am, 7.40 pm- 7.55 pm
- **संस्कार** 7.50 pm- 8.10 pm
- **आस्था** 7.40 am- 8.00 am
- **जी.टी.वी.** 5.00 am- 6.00 am
- **पारस टी.वी.** 4.20 pm- 4.38 pm
- **अरिहन्त** 7.30 pm- 7.50 pm
- **(सत्संग)** 7.10 pm- 7.30 pm

विदेश में संचालित (हिन्दी)

- **संस्कार** 7.40 pm- 8.00 pm
- **आस्था (यू.के/यू.एस.ए.)** 8.30 am- 8.45 am
- **जी.टी.वी.** 8.30 am- 8.45 am
- **एम.ए.टी.वी. (यू.के)** 8.30 am- 8.45 am

विदेश में संचालित (अंग्रेजी)

- **JUS PUNJABI** 4.30 pm-4.40 pm (Sat-Sun only)
- **APAC** 8.30 am -9.00 am
- **SOUTH AFRICA** 8.00 am -8.30 am (CAT)
- **UK** 8.30 am - 9.00 am
- **USA** 7.30 am - 8.00 am (ET)
- **MIDDLE EAST** 8.30 am -9.00 am (UAE)

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 जून, 2018, आर.एन.आई. नं. DELHIN/2017/73538, पोस्टल रजिस्ट्रेशन संख्या DL (DG-II)/8087/2017-2019 (प्रेषण तिथि हर माह की दिनांक 2 से 8 दिल्ली आर.एम.एस. दिल्ली डाकघर) स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली-110006 से प्रकाशित तथा एम.पी. प्रिंटर्स नोयडा से मुद्रित। मुद्रित संख्या 2,00,000 (मूल्य) 5 रूपये

अपना-घर
खुशहाली के आंगन में
चहकता बचपन

असहाय, निराश्रित बच्चे...जहां पारिवारिक परिवेश जैसे वातावरण में खिलते इन नन्हें-मुन्ने मासूमों के चेहरों को देखकर आपका मन भी दया से भर उठेगा-मान्यवर! इन नन्हें बालकों को दें अपना आशीर्वाद।

सम्पर्क करें :- 09929777773,0294-6655555